

## भूगोल में निदर्शन

## (Paradigms in Geography)

मनोविज्ञान (Psychology) और अर्थशास्त्र के समान ही भूगोल भी वर्णनात्मक अवस्था से प्रतिमान (Models) निर्माण की स्थिति में आ गया है। यह प्रक्रिया उन्नीसवीं शताब्दी में प्रारम्भ हुई और वर्तमान शताब्दी के साठहें और सत्तर के दशक में इसे तीव्रता प्राप्त हुई। कुछ प्राधिकारी (Authorities) यह कहते हैं कि भूगोल में वर्णनात्मक अवस्था से परिवर्तन की अवस्था में होते हुए यह विधि निर्माण अवस्था तक की प्रगति है।<sup>10</sup> पिछले कुछ समय में सिद्धान्त निर्माण और नियम स्थापना की प्रक्रिया भूगोलवेत्ताओं में अत्यधिक लोकप्रिय हुई है। प्राकृतिक नियमों जिनका कि सार्वभौम गुण होता है और जिन्हें विश्व के किसी भाग में विश्वास के साथ लागू किया जा सकता है, भौगोलिक नियमों के तदनु रूप (Identical) नहीं होते हैं। गुरुत्व (Gravity) का नियम जो कि एक प्राकृतिक नियम है का उदाहरण है वह भारत, यूरोप अथवा अमरीका में समान वैधता के साथ परीक्षित किया जा सकता है तथा वह एक समान परिणाम देगा। एक प्राकृतिक नियम अनन्तता (Ad Infinitum) से परीक्षण किया जा सकता है। दस लाख परीक्षणों में से यदि 9,99,999 बार कोई नियम सही और केवल दस लाखवीं बार में सिद्ध नहीं होता है तो वैज्ञानिक उस नियम को अस्वीकार कर देते हैं और अवलोकित तथ्य के लिए नये नियम का निर्माण किया जाता है।<sup>11</sup> वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ में वैज्ञानिक और समाज विज्ञानी जानते हैं कि जब वे किसी अणु (Molecule) अथवा मनुष्य के सादृश्य समान व्यवहार का निर्माण करते हैं तो किसी भी अणु अथवा व्यक्ति का व्यवहार पूर्णतः याच्छिद (Random) होता है। इस प्रकार से हमें प्रसंभाव्य (Stochastic) नियमों के सिद्धान्त का ज्ञान है जो यह स्पष्ट करता है कि अधिकांश वैचारणीय तथ्य क्या करेंगे।<sup>12</sup> गोलेज (Golledge) और अमादी (Amadee) ने एक बहुत ही रोचक बिन्दु उठाया है, जब वे कहते हैं कि नियमों की कोई सर्वमान परिभाषा नहीं है। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि प्राथिकतात्मक (Probabilistic) नियम, अनुप्रस्थ काट (Cross Section) नियम, साम्य (Equilibrium) नियम ऐतिहासिक (Historical) नियम, विकासीय (Developmental) नियम, सांख्यिकीय (Statistical) नियम, गणितीय नियम, प्रसंभाव्य (Stochastic) नियम और संघटन (Composition) नियम होते हैं।<sup>13</sup> भूगोल के नियम, प्राकृतिक विज्ञानों के नियमों के समान नहीं हैं क्योंकि भूगोल एक प्रयोगात्मक (Experimental) विज्ञान नहीं है। दूसरे शब्दों में नियंत्रित प्रयोग जैसे कि भौतिकशास्त्र में किये जाते हैं भूगोल विषय में संभव नहीं हैं। भौगोलिक नियमों को केवल क्षेत्रों में ही परखा जा सकता है जहाँ परिस्थितियाँ नियंत्रित नहीं होती हैं। इसके अतिरिक्त अर्थशास्त्र के नियमों के समान भौगोलिक नियमों की जाँच केवल तभी की जा सकती है जब कि सभी वस्तुएँ समान हों। क्रियाशीलता का सिद्धान्त (Principle of Activity) भूगोल में प्रचलित है जिसका अर्थ है कि प्रत्येक तथ्य समय और स्थान में बदल रहा है। भूगोल क्योंकि एक विशिष्ट (प्रादेशिक) विषय है और व्यवस्थाबद्ध/क्रमबद्ध (Systematic) विषयों के अपने अलग नियम और प्रतिमान (Models) होते हैं जो भौतिक विज्ञानों



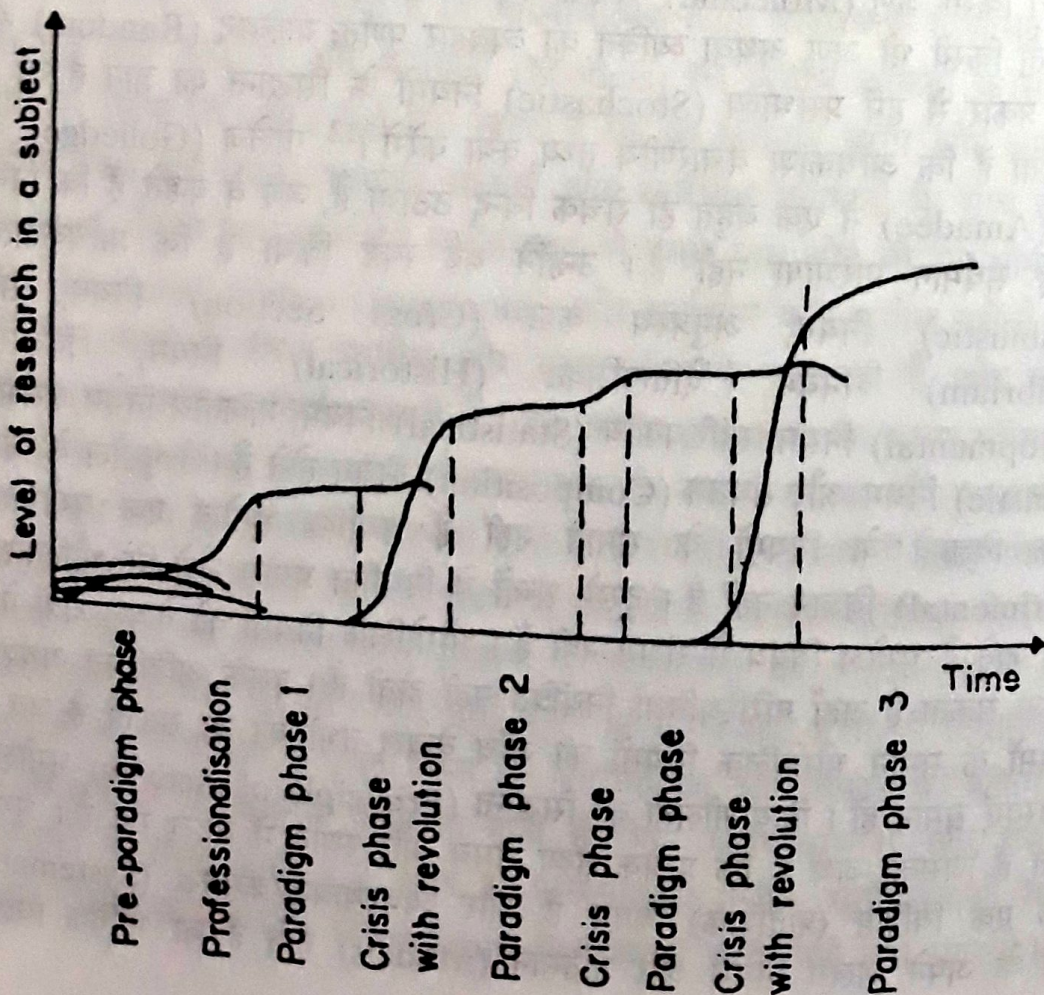
(Physical Sciences) के नियमों से भिन्न होते हैं और यहाँ तक कि कई दृष्टि से सामाजिक विज्ञानों के नियमों से भी भिन्न होते हैं। निम्नांकित पंक्तियों में कुछ भौगोलिक नियमों और निदर्शनों पर प्रकाश डाला गया है। जैसा कुहन (Kuhn) ने विचार प्रस्तुत किया है कि भूगोल भी अन्य विषयों के समान दुर्ब्यवस्था और प्रशान्ति (Tranquillity) से गुजर रहा है।

### कुहन का निदर्शन (Kuhn's Paradigm)

अमरीकी विज्ञान के इतिहासकार एस. थामस कुहन ने विज्ञान की वृद्धि और विकास के बारे में एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त प्रतिपादित किया है। कुहन के अनुसार, विज्ञान एक पूर्ण नियमित (Regulated) क्रिया नहीं है, जहाँ एक पीढ़ी पूर्व के विद्वानों द्वारा प्राप्त किये गये कार्यों पर स्वतः परिणाम स्थापित कर सकें। यह एक परिवर्ती (Varying) तनाव की प्रक्रिया है। जिसमें प्रशान्तकाल की विशेषता ज्ञान की स्थिर वृद्धि संत्रास (Crisis) काल के द्वारा अलग की हुई होती है जो विषय में पुनर्धान को बढ़ावा देती है और निरन्तरता में अवरोध उत्पन्न करती है।<sup>14</sup>

विज्ञान के विकास की इस प्रक्रिया को समझने के लिए कुहन ने एक प्रतिमान

चित्र 10.1 : कुहन का निदर्शन





(Model) तैयार किया जिसका उसने 'विज्ञान का निदर्शन' (Paradigm of Science) नाम दिया। उसने निदर्शन की परिभाषा इस प्रकार दी है 'सार्वभौम स्वीकृत वैज्ञानिक उपलब्धियाँ एक समय में व्यवसायी दृष्टि से निपुण समुदाय के लिए आदर्श समस्या और हल उपलब्ध कराती हैं।' हैगेट ने इन्हें एक प्रकार से अधिप्रतिमान (Super Model) कहा है।<sup>15</sup> दूसरे शब्दों में निदर्शन वैज्ञानिक कार्यों और पद्धतियों का सिद्धान्त है जो अधिकांश भूगोल वेत्ताओं के अनुसंधान को नियमित करता है। उदाहरण के लिए अथवा जहाँ भूगोल वेत्ताओं के समूह के निदर्शनों के बीच विरोध होता है। अनुसंधान कर्ताओं को निदर्शन यह स्पष्ट करता है कि उन्हें क्या खोजना चाहिये और इस घटना में कौनसी पद्धति भौगोलिक है।<sup>16</sup>

कुहन ने अपनी अवधारणा में यह प्रचारित किया था कि विज्ञान के विकास में पूर्व निदर्शन (Pre-Paradigm) अवस्था, व्यावसायिकताकरण (Professionalization) निदर्शन अवस्था प्रथम क्रांति के साथ संक्रास अवस्था, निदर्शन अवस्था द्वितीय, संक्रास (Crisis) अवस्था, निदर्शन अवस्था क्रांति के साथ संक्रास अवस्था, निदर्शन अवस्था तृतीय आदि। इस अवधारणा को हेनरिकसेन (Henriksen) द्वारा आलेखित किया गया है जो चित्र 10.1 में दिखाया गया है।

उपर्युक्त चित्र 10.1 से यह स्पष्ट हो जाता है कि वैज्ञानिक ज्ञान एक पठार के समान प्रगति करता है और विकसित होता है। इसमें यकायक उत्थोथन (Upheavel) और उसके बाद आकस्मिक उत्थान और इसके बाद आसान और धीमी प्रगति होती है। प्रथम अवस्था अथवा पूर्व निदर्शन काल कई भिन्न सम्प्रदायों के द्वारा प्रदर्शित होता है जो व्यक्तिगत वैज्ञानिकों के चारों ओर विकसित होता है। यह काल अपेक्षतः विस्तृत क्षेत्रों से तथा निम्नस्तरीय विशिष्टीकरण द्वारा अव्यवस्थित ढंग से एकत्रित किये गये तथ्यों से जाना जाता है। इस काल में विभिन्न विचारों के सम्प्रदायों के और उनमें वैज्ञानिकों तथा सामान्य आदमी के बीच पूर्ण सम्प्रेषण रहता है। एक विचार का सम्प्रदाय उसके विचारों को दूसरों की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक नहीं मानता।<sup>17</sup>

पूर्व निदर्शन (Pre-Paradigm) अवस्था से वैज्ञानिक विकास आरम्भ होता है और व्यावसायिकताकरण की अवस्था में प्रवेश करता है। व्यावसायिकताकरण (Professionalization) की अवस्था उस समय प्रारम्भ होती है जब विरोधी विचार के सम्प्रदाय, अन्य सम्प्रदायों पर अपना प्रभाव स्थापित करना आरम्भ करता है और समस्या का स्पष्ट उत्तर दिया जाता है। विशेष विचार वाला समुदाय प्रभावी हो जाता है क्योंकि वह नई-नई पद्धतियाँ खोज लेता है अथवा ऐसे प्रश्न रखे जाते हैं जिन्हें अधिक रोचक और महत्वपूर्ण माना जाता है, नवीन शोध किये जाते हैं और शोध प्रगति करता है। कुहन ने यह विचार प्रस्तुत किया है कि गणित और खगोल विद्या की पूर्व निदर्शन अवस्था पुराकाल (Antiquity) में ही पूरी हो गई जबकि सामाजिक विज्ञानों के भागों में परिवर्तन आज भी हो रहा है।



तीसरी अवस्था निदर्शन अवस्था है। यह अवस्था विवेकी प्रबल सम्प्रदाय की विशेषता होती है जो कि प्रायः छोटे स्थान और समय में दूसरों को संपूर्ण (Supplement) करता है। जब एक निदर्शन स्थापित हो जाता है जिससे वह स्पष्ट विशेषणीय समस्या क्षेत्र में अनुसंधान केन्द्रित करता है। इस क्रिया को सामान्य विज्ञान (Normal Science) कहा जाता है।

सामान्य विज्ञान (Normal Science) की अवस्था के पश्चात शोध में निश्चलता (Stagnation) की स्थिति आ जाती है जिससे कि संत्रास और अशान्ति की अवस्था की ओर अग्रसर करती है। इस काल को वैज्ञानिक ज्ञान के विकास में 'अस्थायी अन्धकार काल' कहा जाता है। क्रांति के साथ यह संकटावस्था निदर्शन अवस्था के लिए प्रारम्भिक बिन्दु होता है जो क्रम से पीछा करते हुए संत्रास अवस्था और निदर्शन अवस्था को स्थान देती है। यह संत्रास का अनुक्रम क्रांति और निदर्शन विज्ञान के इतिहास काल में निदर्शन निरन्तर बना रहता है और समाज की प्रगति और ह्यास में सहायता करता है।

इस गतिशील विश्व में सामान्य विज्ञान (Normal Science) का काल भी अनन्त समय तक नहीं रहता है। सामान्य विज्ञान का काल शीघ्रता ओर देरी से संत्रास अवस्था द्वारा विस्थापित कर दिया जाता है। यह इस कारण होता है क्योंकि अधिक से अधिक समस्याएँ एकत्रित हो जाती हैं जो नियंत्रित कर रहे निदर्शन के ढाँचे के द्वारा हल नहीं की जा सकती हैं। अधिक प्रेक्षणों (Observations) द्वारा अद्यस्थ सिद्धान्तों को या तो खिसका दिया जाता है अथवा एक नया सिद्धान्त विकसित हो जाता है जो नियंत्रित करने वाले निदर्शन से बन्धन नहीं रख पाता है। संत्रास अवस्था (Crisis Phase) का विशिष्टिकरण, पूर्व के अवलोकित तथ्यों के पुनर्निर्धारण, नवीन सैद्धान्तिक विचारों और स्वतंत्र चिंतन द्वारा होता है। इसमें आधार भूत दार्शनिक वाद विवाद और क्रिया पद्धति प्रश्नों के चालू व्याख्या सम्मिलित रहती है। यह संत्रास अवस्था उस समय समाप्त हो जाती है जब यह दिखाई दे या तो पुराना निदर्शन विवेचनात्मक (Critical) समस्या को अंत में हल कर दे, सामान्य विज्ञान अथवा कोई अन्य महत्वपूर्ण सिद्धान्त इस समस्या को हल कर दे। सामान्य विज्ञान के काल को पुनः आरम्भ कर देता है अथवा कोई अन्य महत्वपूर्ण उन्नत सिद्धान्त इस समस्या के समाधान के लिए विकसित कर दे जिसमें परिणाम स्वरूप आने वाले कुछ समय तक पुराने निदर्शन में ही अनुसंधान जारी रहना चाहिये। अव्यवस्था संत्रास अवस्था उस समय समाप्त हो जाती है जब नये निदर्शन बड़ी संख्या में नये अनुसंधान कर्ताओं को अपनी ओर आकर्षित करता है।<sup>18</sup>

जब किसी नवीन निदर्शन को स्वीकृत और मान्यता हो जाती है, ऐसी अवस्था में संत्रास अवस्था समाप्त हो जाती है, यह क्रांतिकारी अवस्था का प्रारम्भिक बिन्दु होता है। इस प्रकार के शोध की निरन्तरता में जटिल टूटन शामिल रहती है। ज्ञान के संचय और स्थिर विकास की अपेक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में सैद्धान्तिक संरचना और निर्माण पर ध्यान केन्द्रित होता है। स्वयं का सत्य को समझना और वैज्ञानिकों का विश्व का प्रत्यक्ष ज्ञान नये



आयोगों पर पहुंचाते हैं। नवीन निदर्शनों की स्वीकृति नये और युवा वैज्ञानिकों को मान्यता प्रदान करता है। नवीन शोधकर्ता पुराने और स्थापित वैज्ञानिकों के साथ प्रतिस्पर्धा करना आरम्भ कर देते हैं। नये वैज्ञानिक सामान्यतः पुराने वैज्ञानिकों को बाध्य तो नहीं कर सकते हैं किन्तु वे इसलिए सफल हो जाते हैं क्योंकि पुराने वैज्ञानिक या तो समाप्त हो जाते हैं अथवा अनुसरण कमजोर हो जाता है।

एक निदर्शन का दूसरे निदर्शन में पूर्व विवेकी बदलाव नहीं होता है। नये निदर्शन प्रायः उन समस्याओं के हल का प्रयास करते हैं जिनका पुराने निदर्शन से किसी प्रकार का हल नहीं निकलता किन्तु सभी समस्याओं का उत्तर देने में सक्षम नहीं होते हैं जिनका उत्तर पुराने निदर्शन में सरलता से हल किये जा सकते थे। यह यदाकदा तर्क द्वारा सिद्ध करना संभव होता है कि नवीन निदर्शन पुराने की अपेक्षा अच्छा होता है। सकारात्मक पद्धति शंकापूर्ण होती है क्योंकि अनेक मानकीय मूल्य (Normative Values) और सुरूचिपूर्ण विचार नवीन निदर्शन को सरल और सुन्दर बनाने के लिए प्रभावित करते हैं। अनेक बार युवा अनुसंधान कर्ताओं की वर्तमान वैज्ञानिक विचारधारा को बदलने में निहित स्वार्थ होता है यानी यह चिंता कि अपने से बड़ों से उनका ढंग पालन।<sup>19</sup>

कुहन का निदर्शन वैज्ञानिक ज्ञान की वृद्धि अवस्था की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करता है। अन्य सभी निदर्शनों के समान ही इस प्रतिरूप (Model) के भी गुण-दोष हैं। कुहन का निदर्शन युवा पीढ़ी के अनुसंधानकर्ताओं की नवीन सिद्धान्त प्रतिपादित करने के अवसर प्रदान करता है। उनके निदर्शन को वस्तुनिष्ठ माने जाने के लिए, बिना उनके शोध को वस्तुगत दृष्टि से तर्क संगत बनाये बिना पर्याप्त माना गया। इस प्रकार का निदर्शन मूल्य विवेचन से मुक्त नहीं हो सकता है और इस प्रकार यह वस्तुनिष्ठ पद्धति अथवा वैज्ञानिक शोध का विरोधी हो सकता है। नवीन निदर्शन में नकारात्मक पद्धति होते हुए भी कुहन के सिद्धान्त आधुनिक विज्ञान पर सकारात्मक प्रभाव रखते हैं, इस प्रकार से कि ये ज्ञान के ढांचे और नवीन सिद्धान्तों को स्वीकार करने में सहायक होते हैं, जो हमारे ज्ञान और बोध (प्रत्यक्ष ज्ञान) को बढ़ा देते हैं, किन्तु संगठित प्रशिक्षित समूह के अनुसंधान में वैध प्रवेश देने से नकारात्मक प्रभाव भी बढ़ सकता है। इसके अतिरिक्त कुहन का प्रतिरूप (Model) विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करता है और विषय को समझने के लिए सामान्य और लोकप्रिय सिद्धान्त प्रस्तुत करता है।

इस निदर्शन (Paradigm) के कुछ भी लाभ अथवा दोष हों कुहन के प्रयास ने लम्बे समय से विज्ञान के दर्शन के लिए प्रतिक्षित निदर्शन का विकास किया। यह निदर्शन किसी विषय के ऐतिहासिक विकास को समझने के लिए उपयोगी मार्गदर्शन (Guidelines) प्रस्तुत करता है। किन्तु सम्पूर्ण व्याख्या उपस्थित नहीं करते हैं। कुहन (Kuhn) के निदर्शन के प्रकाश में भूगोल का इतिहास निम्न वर्णन के अनुसार सुगमता से समझा जा सकता है।



भौगोलिक निदर्शन: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

(Geographical Paradigm: A Historical Perspective)

जैसा पूर्व में अध्याय 8 और 9 में वर्णन किया जा चुका है कि भूगोल को अनेक विकासी और क्रिया पद्धति (Methodological) सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ा था। यह विषय वर्णनात्मक और क्षेत्र विवरण अवस्था से होकर परिमाणात्मक, मूलभूत (Radical) द्वन्दात्मक (Dialectical) भौतिक वादी अवस्था तक पहुँचा है। साहित्यिक और गणितीय भाषाओं में स्थानों का स्पष्ट और विश्वस्त वर्णन करने के लिए विविध प्रकार की क्रिया पद्धतियाँ अपनाई गई हैं। फिर भी विषय की प्रकृति, उसके नियमों और निदर्शनों के बारे में विचारों की मैतक्यता (Consensus) प्राप्त नहीं की जा सकी है।

भौगोलिक नियम, प्राकृतिक नियमों के समान परिशुद्ध (Precise) नहीं होते हैं, जैसाकि ब्रेथवेट (Braithwaite) ने परिभाषित किया है, एक प्राकृतिक नियम समय और क्षेत्र में अनियंत्रित श्रेणी का व्यापकीकरण सामान्यीकरण (Generalization) है। दूसरे शब्दों में सार्वभौमिक मान्यता के साथ सामान्यीकरण।<sup>20</sup> सार्वभौम मान्यता के नियम भी केवल भौतिक और रसायनशास्त्र में ही होते हैं। तथापि भौतिक शास्त्र में भी अनिश्चितता के तत्व पाये जाते हैं जिनमें सम्भावित (Probabilities) परिकलन (Calculation) आवश्यक होता है। इसके विपरीत भौगोलिक नियम आनुभाविक प्रकृति के होते हैं और इसी कारण प्राकृतिक विज्ञानों, जिनका निर्माण सामाजिक विज्ञानों में किया जाता है वह विशिष्ट स्थानों और विशिष्ट समय के लिए ही मान्य होता है, और इसलिए इन्हें प्रतिमान (Models) और संरचित विचार अथवा निदर्शन कहा जाता है। प्राकृतिक नियमों में विभिन्नताओं के देखते हुए हार्वे ने नियम संकल्पना को एक विस्तृत अर्थ दिया है और वैज्ञानिक विवरणों का तीन सूत्री पदानुक्रम (Hierarchy) यथार्थ विवरण (व्यवस्थित विवरण) से होकर आनुभाविक व्यापकीकरण का मध्य स्तर अथवा नियम से सामान्य अथवा सैद्धान्तिक नियमों तक अभिग्रहीत किये।<sup>21</sup> नियमों के इस वर्गीकरण की पृष्ठ भूमि में यह जानना रुचिकर होगा कि पिछले डेढ़ सौ वर्षों में भूगोल में किस प्रकार के प्रतिरूप (Models) और निदर्शन विकसित हुए।

यदि हम कार्लरिटर, जिसे आधुनिक भौगोलिक विचारों के संस्थापकों में से एक माना जाता है और विषय में आनुभाविकता का प्रचार किया था के समय से प्रारम्भ करें तो यह कहा जा सकता है कि उसने आगमतात्मक पद्धति को, उसके द्वारा आँकड़ों को प्रदर्शित करने और एक साधारण आनुभविक व्यापकीकरण पर आने के लिए एक ढाँचे के उपाय के रूप में काम में लिया। एक क्षेत्र विवरण विज्ञानी होने के कारण रिटर ने यह दृढ़तापूर्वक कहा था कि समस्त तथ्य मानवजाति के लिए ईश्वर की योजनानुसार वितरित हैं। क्षेत्र विवरण दर्शन की सबसे बड़ी समस्या है कि ऐसे दर्शन का परीक्षण आनुभाविक दृष्टि से नहीं किया जा सकता और इसीलिए यह वैज्ञानिक व्याख्या के नियमानुसार नहीं है। तथापि इसमें निदर्शन की विशेषताएँ हैं। रिटर को क्षेत्र विवरण (Teleological) पद्धति से तात्पर्य



साधारणतः यह लिया जाता है कि कोई तथ्य, ऐसा विश्वास कि वह जो उद्देश्य पूरा करता है उसके सम्बन्ध में उसकी व्याख्या की जाती है। जैविक सम्बन्धों का 'पूर्ण संश्लिष्ट' (Holistic Synthesis) क्षेत्र विवरण व्याख्यात्मक प्रतिरूपों से दृढ़ता से सम्बन्ध रहता है। इस प्रकार की पद्धति सेमेटिक (Semiotic) धर्मों और उनके दर्शनों में प्रतिबिम्बित होती है।

उत्तर रिटर काल (Post Ritter Period) डार्विन के प्रभुत्व वाला काल था, जिसने समस्त विज्ञानों के दर्शन में क्रांतिकारी परिवर्तन किये और तथ्यों के वितरण की व्याख्या में कार्य और कारण को सम्मिलित किया। यह वह समय था जब भूगोलवेत्ता और वैज्ञानिकों ने भूगोल की प्रकृति के बारे में गंभीरता से विचार करना प्रारम्भ किया और इस पर विचार केन्द्रित करना प्रारम्भ किया कि क्या भूगोल विषय को विज्ञान माना जा सकता है। डार्विन ने भूगोल में नियतिवादी पद्धति की आधार शिला रखी। उसके विचार में किसी समाज का सामाजिक—सांस्कृतिक विकास प्राकृतिक अवस्थाएँ निश्चित करती हैं। डार्विन के पश्चात् वैज्ञानिक प्राकृतिक नियमों (और नैतिक नियंत्रित सामाजिक नियमों) को नियंत्रित करने के लिए विचार कर रहे थे और बहुत अधिक विस्तार में सामान्य (Nomothetic) (नियमान्वेशी) पद्धति को अपनाया। इस अवस्था में आगमनात्मकों का स्थान उत्तरोत्तर कल्पित निगमनात्मक पद्धति ने लेना आरम्भ कर दिया था। अनुसंधान कर्ताओं जिन्होंने अपने प्रेक्षण आगमनात्मक व्यवस्था अथवा अन्तर्ज्ञानात्मक (Intuitive) अन्तर्दृष्टि से आरम्भ किये थे और संरचना के अनुभव पूर्ण निर्मित किये थे इनका उपयोग परिकल्पनाओं के समूह को अभिग्रहीत करने के लिए किया गया। जिनका आनुभविक तथ्यों के परीक्षण द्वारा पुष्टि, समर्थन अथवा अस्विकृति की जा सके। डब्ल्यू. एम. डेविस द्वारा भू-आकृति के विकास, अपरदन का सामान्य अपरदन चक्र का सिद्धान्त और मेकिण्डर का हृदय देश (Heart-Land) का सिद्धान्त भौगोलिक प्रतिरूप के इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं। इन निदर्शनों के परिणाम स्वरूप भूगोल को विज्ञान के सम्प्रदायों में मान्यता और आदर प्राप्त हो सका। किन्तु इस काल में मानव भूगोल ने अवरुद्ध प्रगति प्रदर्शित की थी। इस अवस्था में बाइडल-डी-लाब्लाश और उसके अनुयाईयों ने संभवाद पर बल दिया और यह प्रचारित किया कि मनुष्य केवल एक निष्क्रिय अभिकर्ता नहीं है, जिस पर प्रकृति की शक्तियाँ अपनी भूमिका अदा करती हैं, और मानव समाज का निर्धारण करते हैं। इस कार्य के लिए अधिक संख्या में लघुस्तर के अध्ययन किये गये जिनमें प्रादेशिक उपांगम थे और इस प्रकार एक विशिष्ट विज्ञान (Idiographic) अथवा प्रादेशिक विज्ञान कुहन बन गया। इस शब्दावली में प्रथम निदर्शन की अवस्था है। (चित्र 10.1) नियतिवाद का काल बहुत छोटा रहा और उसका स्थान संभववाद और फ्रांसीसी सम्प्रदाय ने ले लिया था (अध्याय-8) संभववादियों ने यह पद्धति विकसित की कि किसी समाज और उसके आवास के ज्ञान के लिए क्षेत्र अध्ययन अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है।

यद्यपि संभववाद और प्रादेशिक सम्प्रदाय ने नये निदर्शन (Paradigm) विकसित